535

सं ग्री.वि./गुड़गांवा/71-84/25666.--चूंकि हरियाणा के राज्याल को राव है कि मैं वारमाल्ट (इन्डिया) प्रा० लि., गुड़गांवा, के अभिक्र श्री कैलाश तथा उसके प्रवस्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद जिल्हित मामते में कोई सीधोगिक विवाद है;

भीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शवितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1969 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-<math>57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1953 द्वारा उक्त ष्मिसुचना की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या बिवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामंला है:---

क्या श्री कैलाश की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 24 जुलाई, 1984

सं॰ मा.वि./एफ.डी./104-84/25785.--चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं॰ स्टोल फास्टनजं प्रा० लि० प्लाट नं० 269, सैनटर-24, फरीदाबाद, के श्रिमिक श्री बीजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई धौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझवे हैं;

इस लिए, भव, भौद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई क्षितिको का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए े प्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा धन्त श्रीविनियम की वारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सस्विन्धत नीचे लिखा मामखा म्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से बबंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

स्था श्री बीजेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन त्यायोचित तथा ठीत है ? यदि नहीं, तो वह तिम राहत का हकदार है ?

सं भो.वि./एफ..डी./2-105/25792.--वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं श्रिसीजन स्टैम्पिग लि॰ प्लाट नं॰ 106, सैक्टर-24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री विन्देश्वर मण्डल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निवित मामले में कोई मोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट सरना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, को धारा 10 को उनवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरो, 1958 द्वारा उक्त पधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगठ **बथवा सम्बन्धित मामला है:--**

क्या श्री विन्देश्वर मण्डल की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है: सं भी.वि./एफ. डी./68-84/25799.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वित्दुस्तान सिल्क मिल्ज प्लाट नं 0 104, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री उमेश कुमार शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई घोषोगिक विवाद है;

मौर चूंति हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

63

इति १, अब, औद्योगित विवाद प्रवितिषत, 1947, को जारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शित्तवों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा है राज्यसात उपके द्वारा सरकारी प्रवित्तवों का प्रयोग करते हुए प्रवित्तवों के साथ ख़ित हुए प्रवित्तवों को 11495-जो-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरा, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनिषम को धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायात्य, करो दावाद, को विवादयस्त या उन्नों सुवंगत या उसमें संबन्धित नीचे लिखा मामला स्थायिन गेंय के लिए तिर्देश्ट करते हैं ओकि उत्त प्रवन्तकों तथा श्रमित्त के बोच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत स्थाय सम्बन्धित मामला है:---

न्या श्री उनेत कुमार ार्मा की सेवाभों का समापन न्यायो चित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं श्री.वि./एफ,डी./94-84/25806. - -चूंकि हरियाणा के राज्यपात की राय है कि मैं० श्र टो तैम्पस ति०, एन. खाई. टी. फरीदावाद. के श्रमिक ममता खन्ना तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिन मामले में कोई भौदोगिक प्यकाद हैं;

भौर भार हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वांछनीय समझते हैं 🕻

्यलिए, अत्र, श्रीधार्गिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के यण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का अयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना मं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी. श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरअरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादअस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए विशिष्ट हरों है जो कि उसा प्रवन्धकों तथा अभिन के वीच पा तो विवादअस्त मामक है या विवाद से सुसंगत अयगा सम्बन्धित मामला है ---

वया ममना खन्ता की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एक०बी०/62-84/25813. —वृक्ति हरिशाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० वी. के. इण्डस्ट्रीत प्लाट तं० 122, मैक्टर-6, फरादाबाद, के श्रामिक श्री रामा नन्द यादन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

मोट बुंकि हुरियाणा के राज्यसान निवाद का ना योगाँव ने गोर्दिश्य करता नाखनीय सनजाते हैं।

इसिलिए, भव, प्रौद्योगिक विवाद प्रवितिश्वम, 1947, को गरा 10 को उनगरा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इरिसा है रास्तान दवके सरा परकारों प्रशिव्ह का वंश 5415-3-थम-68/15254, दिनांक 20 गून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रवित्तृचना संश् 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी. 1958 द्वारा उक्त प्रवित्यम की प्रारा 7 के प्रयोग गरित अन स्थायालय, करोदाबाद, को विवादग्रस्त या उमसे सुस्तान या उससे पस्यित्य नीचे लिखा मायला स्थायतिगाँव के विराहित्य करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तान श्रम के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से पुसंगत प्रथवः सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री रामा नन्द यादव की सेपामों कासमापन न्यायोचित तथा **औ**क है ? यदि नहीं, तो वह किस **राह्त का** हकदार है ?

मं जो.वि./गृहगांवा/75-84/25820.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि रै० 1. मैनेजिंग डायरैफ्टर दी हरियाणा स्टेट फैडरेशन ग्राफ सन्जूमर्स कोप० होल सेल स्टोरेज लि0, सैक्टर 22-बी, चण्डीगढ़, 2. दी महेन्द्रगढ़ सेन्ट्रल को0, ग्रो0 कन्जूमर्स स्टोर लि0 महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री परमा नन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसिनए, मन, श्रीक्षोगिक विवाद मिधिनियम, 1947, का जारा 10 की उपजारा (1) के जण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए मिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त मिधिसूचना को धारा 7 के मिथिन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादमस्तया उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या सो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत मधना सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री परमा नन्द की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?